तीन नन्हे खरगोश

तीन नन्हे खरगोश

एक समय की बात है कि कहीं किसी जगह तीन नन्हे खरगोश रहते थे. तीनों अपने माता और पिता के साथ ज़मीन के अंदर एक आरामदायक बिल में रहते थे.

एक दिन उनके पिता ने उन्हें बुलाया. “अब तुम बड़े हो गए हो,” उसने कहा. “समय आ गया है कि घर से जाकर तुम बाहर का संसार देखो. लेकिन सबसे पहले अपने लिए एक सुरक्षित बिल खोद लेना. और अगर कभी कोई लोमड़ी आ जाये तो.....”

“हमें ज़मीन के अंदर बिल में छिप जाना होगा,” तीनों ने एक साथ चिल्लाकर कहा.

तीनों नन्हे खरगोशों ने अपने माता-पिता को अलविदा कहा और, दुनिया देखने के लिए, फुदकते हुए घर से चल दिए.

वह बहुत निडर और उत्साहित थे. आखिरकार, वह बड़े हो गए थे. जैसा उनसे कहा जाता था वैसा ही करने की अब कोई आवश्यकता नहीं थी. जो उनका मन चाहता, वो करने को वह अब पूरी तरह स्वतंत्र थे.

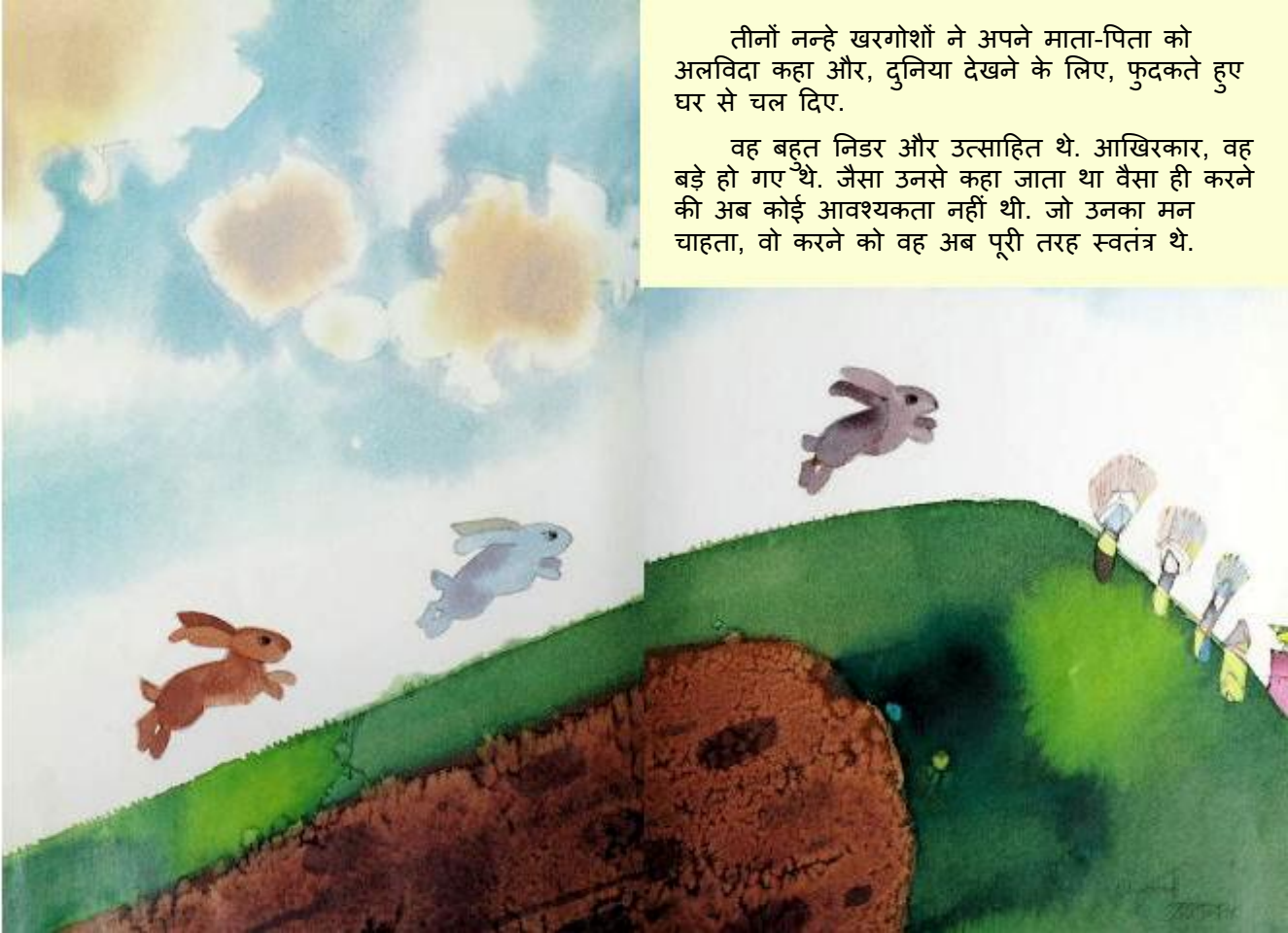

पहले खरगोश को अपने घर के लिए सुंदर जगह मिल गई.

“मुझे वह सब करने की आवश्यकता नहीं है जो मुझे बताया गया है. इसलिए बिल खोदने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है,” वह बोला. “मैं अपने लिए बस एक मुलायम घोंसला बनाऊँगा.”

उसने कुछ डालियाँ, सूखी घास और काई इकट्ठी कर ली. शीघ्र ही उसका घोंसला बन गया इसलिए खेलने और खाने के लिए उसके पास बहुत समय था.

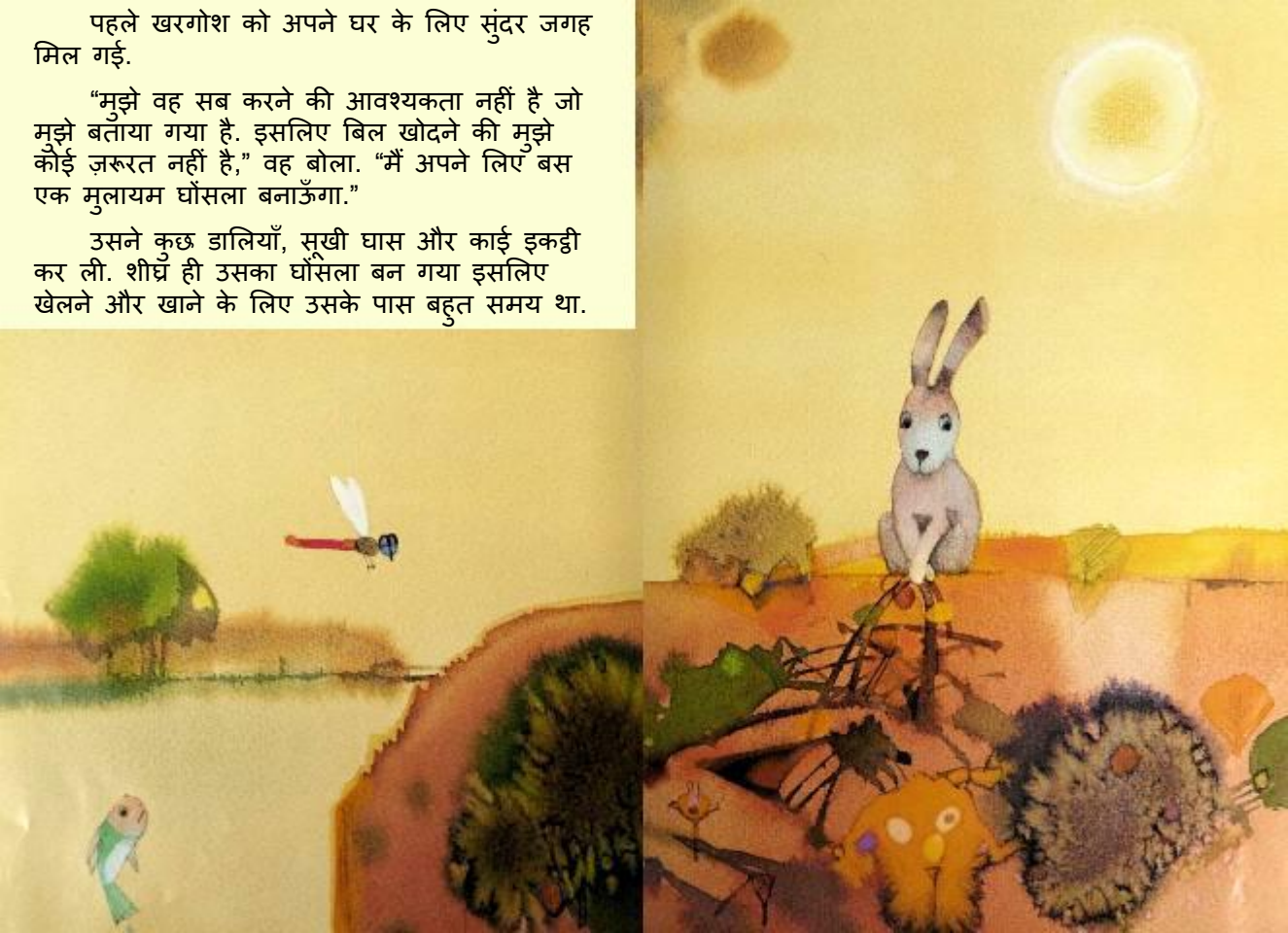

खरगोश फुदकता हुआ घास के मैदान में आ गया और नर्म-नर्म घास कुतरने लगा. अचानक उसे किसी की गंध आई. एक लोमड़ी निकट ही घात लगा कर बैठी थी. लोमड़ी भूखी थी और एक नन्हे खरगोश को पकड़ना चाहती थी.

अगर लोमड़ी आसपास है तो मुझे ज़मीन के अंदर छिप जाना चाहिए, नन्हे खरगोश ने सोचा. पर उसके पास तो सिर्फ घोंसला था. घोंसला तो पक्षियों के लिए होता है, एक खरगोश घोंसले के अंदर नहीं छिप सकता.

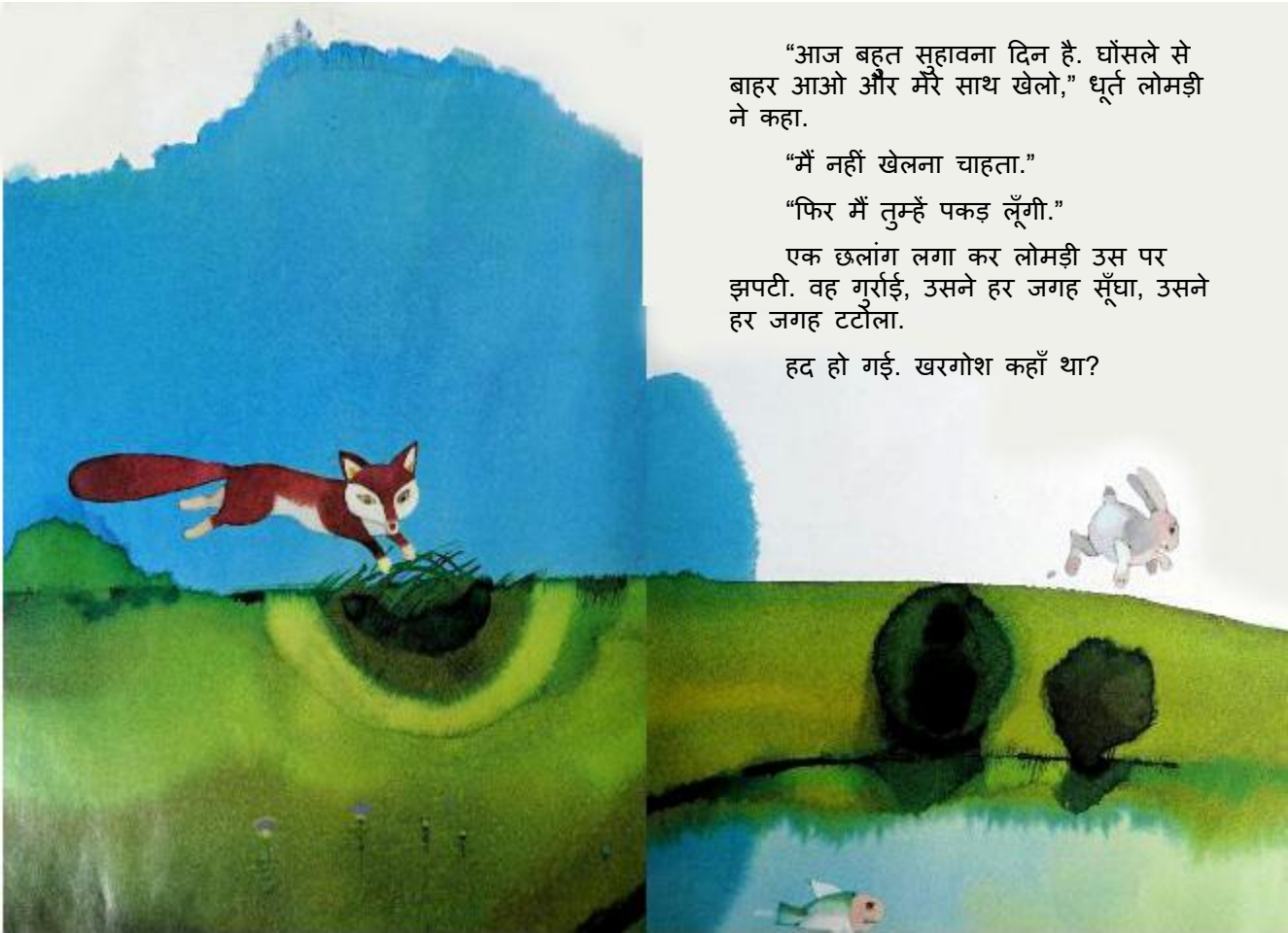

"आज बहुत सुहावना दिन है. घोंसले से बाहर आओ और मेरे साथ खेलो," धूर्त लोमड़ी ने कहा.

"मैं नहीं खेलना चाहता."

"फिर मैं तुम्हें पकड़ लूँगी."

एक छलांग लगा कर लोमड़ी उस पर झपटी. वह गुर्राई, उसने हर जगह सूँघा, उसने हर जगह टटोला.

हद हो गई. खरगोश कहाँ था?

दूसरे खरगोश को भी रहने के लिए अच्छी जगह मिल गई थी.

"बिल खोदने में बहुत समय लग जाता है. मुझे लगता है कि मैं अपने लिए एक झोंपड़ी बना लूँगा. फिर जो मन में आएगा वो मैं कर पाऊँगा," नन्हे खरगोश ने कहा. उसने कुछ डालियाँ, काई और पत्ते इकट्ठे कर लिए. शीघ्र ही उसका नया घर बन कर तैयार हो गया. अब नन्हे खरगोश के पास खेलने और खाने के लिए बहुत समय था.

प्रसन्नता से उछलता-कूदता वह घास के मैदान की ओर चल दिया.

कुछ समय बाद नन्हे खरगोश को किसी की गंध आई. वह एक लोमड़ी थी जो निकट ही छिप कर बैठी थी. वह बहुत भूखी थी और इस नन्हे खरगोश को पकड़ना चाहती थी.

अगर लोमड़ी आसपास है तो मुझे ज़मीन के अंदर छिप जाना चाहिए, नन्हे खरगोश ने सोचा.

लेकिन उसके पास तो सिर्फ अपनी झोंपड़ी थी, और खरगोश के छिपने के लिए लकड़ियों का घर सही जगह नहीं है.

"आज बहुत सुहावना दिन है. घर से बाहर आओ और मेरे साथ खेलो," चालाक लोमड़ी ने कहा.

"मैं नहीं खेलना चाहता."

"फिर मैं तुम्हें पकड़ लूँगी."

एक छलांग लगा कर लोमड़ी उस पर झपटी. वह गुर्राई, उसने हर जगह सूँघा, हर जगह टटोला. वह फिर गुर्राई और हर तरफ उसने फिर से सूँघा और टटोला.

हद हो गई. खरगोश कहाँ था?

तीसरे खरगोश को एक पल में पता चल गया कि वह कहाँ रहना चाहता था.

"इस जगह में एक गहरी, आरामदायक बिल बनाऊँगा" उसने कहा. "और जब मेरा घर बन जायेगा तो मैं कुछ भी करने को स्वतंत्र हो जाऊँगा."

उसने सारा दिन खुदाई की और सारी रात खुदाई की. खेलने और खाने के लिए उसके पास समय ही न था. अंत में उसने घास और फूस इकट्ठी कर के ज़मीन के बहुत नीचे अपने लिए एक मुलायम बिस्तर बना लिया. आखिरकार उसका घर बन कर तैयार हो गया. अपनी बिल के छोटे से मुँह के बीच से खिसकते हुए वह बाहर आया और घास के मैदान में चला गया. प्रसन्नता से वह उछल-कूद करता रहा. सुनहरी धूप में खेलता रहा. और जो कुछ भी स्वादिष्ट उसे वहाँ मिला वह मज़े से खाता रहा. लेकिन तभी उसे लोमड़ी की गंध आई जो शिकार की तलाश में वहाँ घूम रही थी. लोमड़ी पहले से कहीं ज़्यादा भूखी थी.

अगर लोमड़ी आसपास है तो मुझे ज़मीन के अंदर छिप जाना चाहिए, नन्हे खरगोश ने सोचा और वो तुरंत अपने बिल में घुस गया. खरगोश की बिल छिपने के लिए सबसे उत्तम जगह थी!

"आज बहुत सुहावना दिन है. अपनी बिल से बाहर आओ और मेरे साथ खेलो," भूखी लोमड़ी ने गुर्रा कर कहा.

"अगर मुझे पकड़ सकती हो तो पकड़ लो!" नन्हे खरगोश ने ज़ोर से हँसते हुए कहा.

एक छलांग लगा कर लोमड़ी उस पर झपटी. वह गुर्राई और उसने सूँघा और उसने टटोला और वह फिर गुर्राई और उसने फिर सूँघा.....लेकिन बहुत गुर्राने और सूँघने और टटोलने के बाद भी वह नन्हे खरगोश तक न पहुँच पाई!

बिल का मुँह बहुत तंग था और खरगोश को पकड़ने के प्रयास में लोमड़ी का सिर बिल में बुरी तरह फँस गया. वह बहुत घूमी और छटपटाई और कसमसाई, लेकिन न वह बिल के अंदर जा पाई और न ही बाहर निकल पाई.

"मेरी मदद करो, प्लीज़!" लोमड़ी घबरा गई और हार कर चिल्लाई.

"बाप रे," नन्हे खरगोश ने प्रसन्नता से कहा. "अब मैं बड़ा हो गया हूँ और जो कुछ मुझ से कहा जाता है वह सब करना मेरे लिए आवश्यक नहीं हैं. जो मेरा मन करता है वह सब अब मैं कर सकता हूँ. और मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ. तुम तो मुझे पकड़ कर खाने की कोशिश कर रही थी."

"प्लीज़, प्लीज़," लोमड़ी चीखी. "जो कुछ भी तुम चाहोगे मैं तुम्हें दूँगी, बस मेरी मदद करो."

"तो फिर वचन दो कि मुझे और मेरे भाइयों को तुम शांति के साथ रहने दोगी." खरगोश ने कहा.

"हाँ, हाँ...मैं वचन देती हूँ," लोमड़ी चिल्लाई. "मैं वैसा ही करूँगी. अब बाहर निकलने में मेरी मदद करो!"

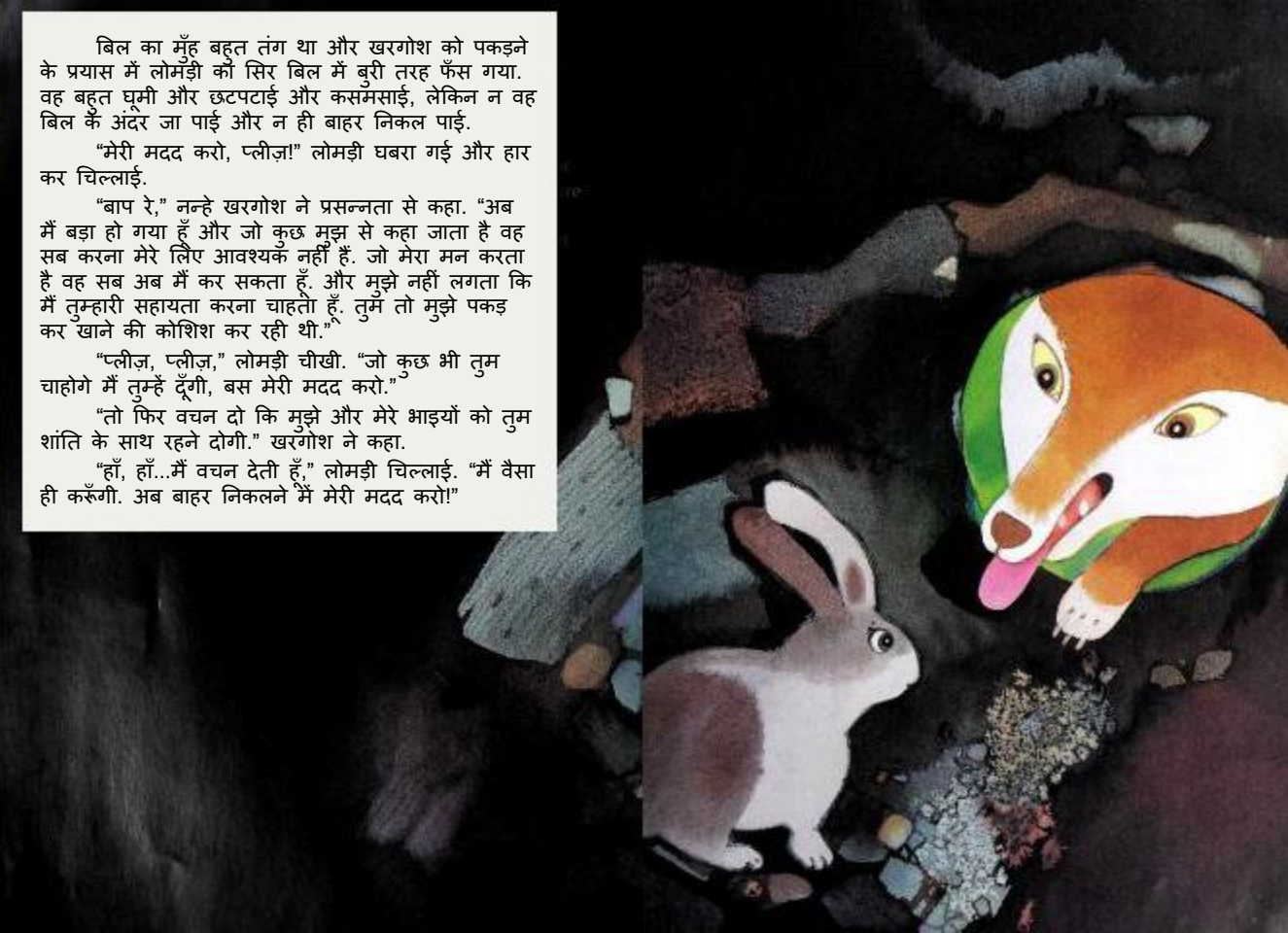

खरगोश ने लोमड़ी की नाक पर इतने ज़ोर से धक्का मारा कि पलटती हुई वह बिल से बाहर पीठ के बल जा गिरी.

खाली पेट और गंदी फर के साथ लज्जित लोमड़ी वहाँ से दुम दबा कर भाग गई.

पहले दोनों खरगोशों ने झटपट अपने लिए सुरक्षित, आरामदायक बिलें खोद लीं.

जब यह काम पूरा हो गया तो, मन चाही चीज़े खाने के लिए और मन चाहे खेल खेलने के लिए, तीनों नन्हे खरगोश भाग कर घास के मैदान में आ गए.

लेकिन लोमड़ी तो आखिरकार लोमड़ी ही होती है. जब वह अपना वचन भूल गई तो यहाँ-वहाँ सूँघते हुए उधर आ गई.

तीनों नन्हे खरगोश ज़मीन के अंदर अपनी-अपनी बिलों में घुस कर छिप गए.

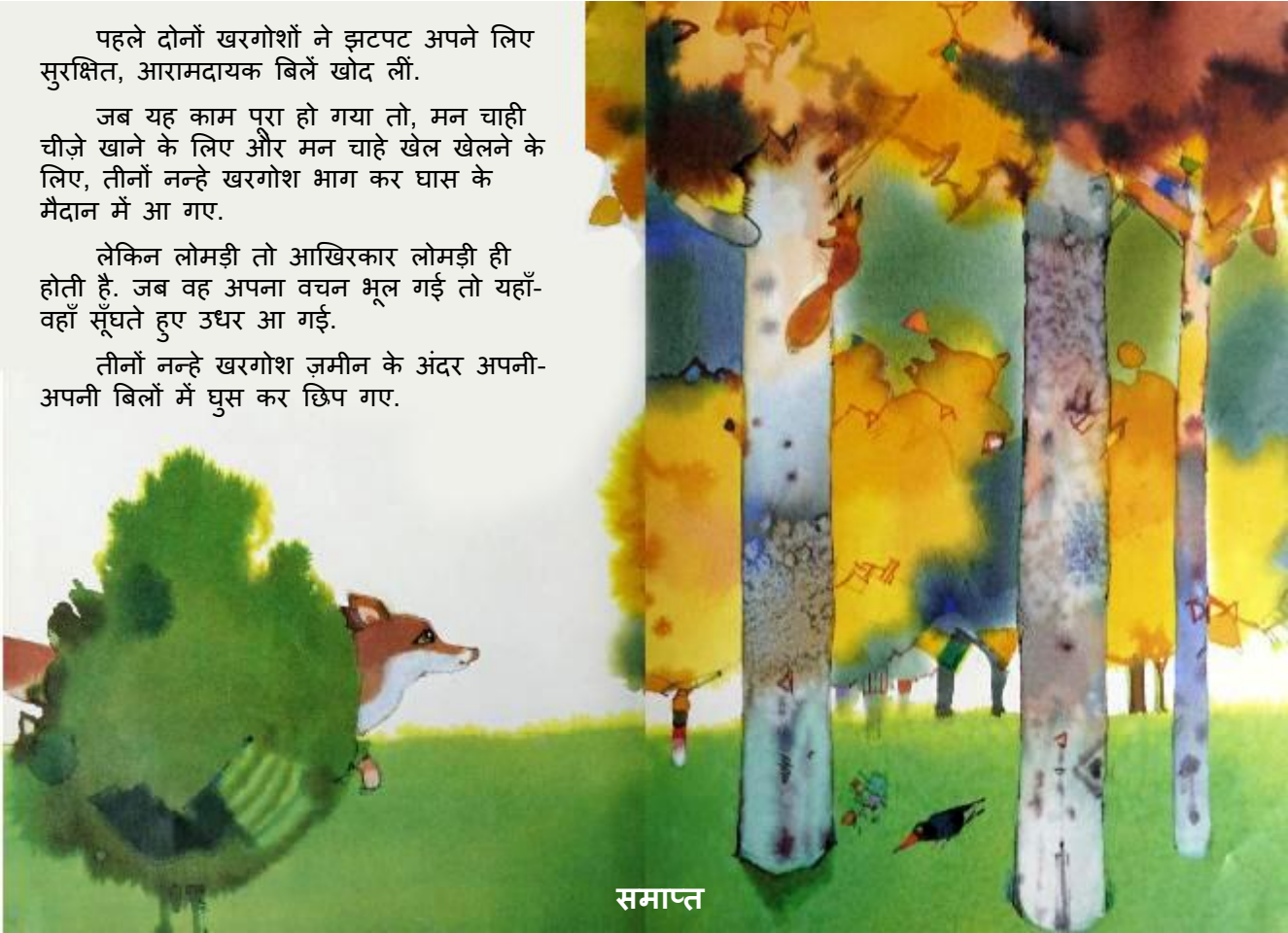

समाप्त